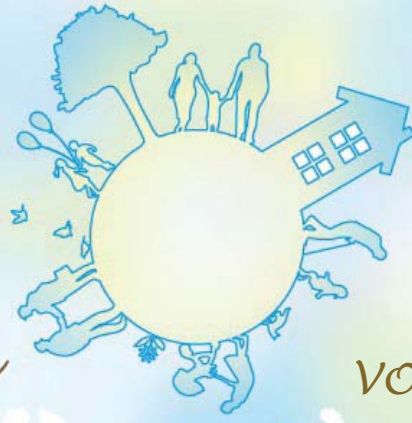


# Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

6  
2018

VOL. 153



## Founder's Essay

### उदार मन का परिदृश्य

स्वयं को विकसित करने का सबसे उत्तम अवसर वह है, जब आप किसी ऐसे व्यक्ति से टकराते हैं जो आपके प्रति बैर भाव से ग्रस्त है, या आप जो कहते हैं उसे स्वीकारने से इनकार करता है। जब हम ऐसी स्थिति में पड़ते हैं, तो हम लाचार हो जाते हैं, लेकिन हमें एक सीख मिलती है कि लोगों से निपटना अवश्य ही मुश्किल हो सकता है।

उनके विपरीत, वैसे लोग हैं जो, आप जो कुछ भी कहते हैं उसे स्वीकार करते हुए, अकस्मात् कहते हैं, "हाँ, निश्चित रूप से।" जब आप ऐसे लोगों से मिलते हैं जो हर बिन्दु पर बातें करते हैं और केवल आपकी गलतियों को देखते हैं, गंभीरता से उनके साथ किसी निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करें, उनके कठोर दृष्टिकोण के पीछे छिपा उनका अकेलापन और उनकी कमजोरी धीरे-धीरे दिखाई देगी। एक बार जब आप उन लोगों के दिलों को समझ लेते

हैं, तब आप उनके प्रति उदासीन नहीं रहेंगे।

वास्तव में, जब आपका सभी प्रकार के लोगों से सामना होता है, उनके साथ सम्पर्क बढ़ाने का प्रयास करते हैं, और मानव हृदय की असल प्रकृति को समझने का प्रयत्न करते हैं, तो आपकी तंत्रिका की शक्ति विकसित होगी। अब आप किसी से सामना होने पर भय से नहीं हटेंगे। यह उदार मन के परिदृश्य से प्राप्त होनेवाली समझ का अर्थ है।

मानव हृदय की गहराइयों को समझे बिना, आपको दूसरों की वास्तविक चिंता का अनुभव नहीं होगा, और इसके कारण, लोग आपके नेतृत्व का अनुकरण नहीं करेंगे।

From *Kaisozuikan 9* (Kosei Publishing Co. 1997), pp64-65

### Living the Lotus Vol. 153 (June 2018)

Senior Editor: Koichi Saito  
Editor: Eriko Kanao  
Copy Editor: Parmita Shekhar

*Living the Lotus* is published monthly  
by Rissho Kosei-kai International,  
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,  
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.  
TEL: +81-3-5341-1124  
FAX: +81-3-5341-1224  
Email: [living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp](mailto:living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp)

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

### प्रेसिडेंट का सन्देश दृढ़ खड़े होना

निचिको निवानो

प्रेसिडेंट, रिश्शो कोसेइ काइ



### पहले, गहरा श्वास लो

बौद्ध पिटकों के सबसे प्राचीन सूत्रों में एक धम्मपद में यह गाथा है, “वह जो अपने बढ़ते क्रोध के वेग को नियंत्रित कर सकता है, जैसे कि मानो वह तेज चलती गाड़ी को नियंत्रित करता है, मैं उसे दक्ष चालक कहता हूँ।”

यहाँ शाक्यमुनि अपने क्रोध के वेग के नियंत्रण के महत्व की व्याख्या करते हैं। यद्यपि, हमें ऐसा करने के लिए सिखाया जाता है, फिर भी अपनी भावनाओं या संवेगों पर नियंत्रण रखना कठिन है, क्योंकि ये क्रोध के विस्फोट तक ही सीमित नहीं हैं। हम मानव प्राणियों की प्रवृत्ति में है कि जो नहीं कहना चाहिए, उसे कहते हैं, उन चीजों को खरीदने के प्रलोभन का संवरण नहीं करते हैं, जिन्हें नहीं खरीदना चाहिए, और सही रास्ते से भटकना और परिणाम, दूसरों के साथ संघर्ष में पड़ जाना हो सकता है।

खैर, फिर, जब आपको लगता है कि आप क्रोध, इच्छा, या आत्मपरक विचार से अभिभूत होने वाले हैं, तो आप उनके विरुद्ध दृढ़ कैसे रह सकते हैं?

मेरी अनुशंसा है कि आप कुछ भी करने से पहले, श्वास लें। एक गहरी श्वास ले कर, आप अपने हृदय को थोड़ा शांत रखें। यह भी महत्वपूर्ण है कि, यदि संभव हो, तो आप समस्याओं को रात भर आराम करने दें, और फिर उनके बारे में शान्ति से सोचें।

इसके अतिरिक्त, यदि आप ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें धार्मिक विश्वास है, जब तृष्णा, क्रोध और अज्ञानता का काला बादल आपके मन को घेरने लगे, तो अपना ध्यान इस ओर करें कि “इस संबन्ध बुद्ध क्या सोचेंगे?” या “बुद्ध क्या करेंगे?” या आप अपना आत्मसंयम पुनः प्राप्त कर सकते हैं। अस्तित्व के कुछ रूपों जैसे कि देवताओं और बुद्धों, जो दिखाई नहीं दे रहे हैं, उनकी जगह, कुछ लोग अपने पास के आदर्श मॉडल की ओर मुख करते हैं जिसके साथ उनका सीधा संबंध है और सोचते हैं कि “मेरे पिता क्या करेंगे?” या “मेरी माँ क्या कहेंगी?” और इस प्रकार क्रोध, इच्छा, या स्वार्थपरता की भावना को खत्म करते हैं।

आष्टांगिक मार्ग का दूसरा अंग “सम्यक विचार” का अर्थ है “तृष्णा, क्रोध और अज्ञानता से दूर रहना, और बुद्ध की तरह उदार मन के साथ वस्तुओं के बारे में सोचना।” जब हम इसे अपने दैनिक जीवन में लागू करते हैं, विशेष रूप से, जब हमें लगता है कि हमारी भावनाएँ और आवेग बेकाबू बढ़ते हैं, हम पहले गहरा श्वास लें फिर दृढ़ खड़े हो जायें, यही सम्यक विचार का प्रवेश द्वार है, है ना?

## संवेदनशील मन

मन की तीन विकृतियों, तृष्णा क्रोध और अज्ञानता (अर्थात् आत्मपरक मूर्खता) से मुक्त हो जाना, और उदार मन के साथ वस्तुओं के बारे में सोचना है—मैं सोचता हूँ कि आप सभी जानते हैं कि यह कितना महत्वपूर्ण है। फिर भी, मैंने सुना है कि कुछ लोगों ने, निराशा में, ऐसा लगता है जैसे कि कोशिश करना भी छोड़ दिया है। क्योंकि वे इसे जानते हैं कि जितना ही उन्हें बताया जाय कि उन्हें ऐसा बनना चाहिए या उन्हें इच्छाओं और आसक्तियों से दूर रहना चाहिए, उतना ही अधिक वे स्वयं को “बेकार” मनुष्य के रूप में सोच सकते हैं कि जिनका मन कभी तृष्णा, क्रोध, और स्वार्थपरता से मुक्त नहीं हो सकता है। उस स्थिति में, हम अपने परिप्रेक्ष्य को थोड़ा क्यों नहीं बदलते हैं, जाँच करें कि सम्यक विचार का सही अर्थ क्या है, और इसकी समझ को गहराई दें?

“सम्यक विचार” का अर्थ है चीजों के बारे में यथोचित सोचना और मन में बिना किसी लालच के, बिना क्रोध भाव के और नहीं अन्य को नीचा दिखलाने के लिये। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है कि मन जो साझा करता है, मन जो दूसरों के साथ सहृदयता से बातचीत करता है, और मन जो दूसरों की चिन्ता करता है। और फिर, जब हम इसके सार को एक शब्द में रखते हैं, तो यह संवेदन के अलावा कुछ अन्य नहीं है। दूसरे शब्दों में, यहाँ, जब हम “सम्यक” कहते हैं, तो हम वास्तव में “संवेदनशील मन से” का अर्थ लेते हैं।

कोई मानव प्राणी पूर्ण सही नहीं है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम संवेदनशील मन से वस्तुओं के बारे में सोचने की व्यक्तिगत आदत पैदा करें, यद्यपि हम तृष्णा या क्रोध से मुक्त नहीं हो सके हैं, जो कभी-कभी हमारे मन पर हावी हो जाता है।

ऐसा करके, कोई भी बुद्ध की तरह एक उदार मन के साथ विचार और कार्य कर सकता है। हालाँकि, चाहे “दृढ़ खड़े हों” या “संवेदनशील मन से सोचते हैं,” जिन स्थितियों में आपको ऐसा करना कठिन लगता है, वे आपके जीवनकाल में एक से अधिक बार आयेंगे।

मैंने एक बार इस वाक्यांश के बारे में बात की है, “मौन रहो जैसे कि सूरज की तरह, ठंडी हवा की तरह, खंभे की तरह, चट्टान की तरह।” जब आपको किसी से परेशानी है, और विशेष रूप से यदि आपको लगता है कि आप तीव्र मनोभाव से अभिभूत होने वाले हैं, तो इस वाक्यांश में वर्णित प्रकृति के शान्तभाव के बारे में सोचें और अपने मन के फ्रेम को विस्तार देने की कोशिश करें। जैसे कि हम मानव प्राणी और प्राकृतिक लोक एक हैं, आप और आपकी आँखों के सामने के लोग भी एक हैं- और इसे महसूस करके, हम अपने मन का “दक्ष चालक” बन जाते हैं। बुद्ध की तरह उदार मन के साथ, हम कृतज्ञभाव से ओतप्रोत जीवन यापन कर सकते हैं।

From Kosei, June 2018.





## दक्ष भैषज्यगुरु का दृष्टान्त

## बुद्ध का शाश्वत जीवन

एक महाज्ञानी भैषज्यगुरु था। वह औषधि तैयार करने और सभी प्रकार की बीमारियों के उपचार में दक्ष था। उसके अनेक पुत्र थे। जब वह घर से बाहर था, एक दिन उसके पुत्रों ने गलती से एक औषधि का सेवन किया। जिसमें विषैले तत्व थे। औषधि का धीरे धीरे उन पर असर हुआ और पुत्रगण पीड़ा से जमीन पर लोटने लगे। उस समय उनका पिता घर वापस आ गया। जब उनकी नज़र अपने पिता पर पड़ी, वे सभी बहुत खुश हुए।



उन्होंने पिता से कहा कि क्या हुआ है और उनसे अपने जीवन की रक्षा के लिए आग्रह किया। पिता ने शीघ्र आवश्यक औषधीय जड़ी बूटियों को इकट्ठा किया, उन्हें एक साथ मिलाया, और रंग, गंध स्वाद में परिपूर्ण औषधि तैयार कर कहा। “इसे सेवन करो! यह तुम सभी को पीड़ा से शीघ्र मुक्त कर देगी और यह सुनिश्चित करेगी कि इसके बाद कभी भी बीमार नहीं हो।” जिन पुत्रों ने अपनी चेतना पूरी तरह से नहीं खोया था, उन्होंने तत्क्षण उसे पी लिया और पूर्ण स्वस्थ हो गए। हालाँकि, विषैले तत्व के कारण अपनी चेतना खोने वाले अन्य पुत्रों ने औषधि पीना अस्वीकार किया, क्योंकि उन्हें देखने में अनाकर्षक लगी।



पिता को उन पर दया आयी और उसने उन सभी की सुरक्षा का एक उपाय निकाला। उनसे कहा तुम सबको औषधि पी लेना चाहिए और बाहर निकल गया। बाद में, संवादवाहक से उन्हें यह समाचार भिजवाया कि पिता अब नहीं रहे। पिता की मृत्यु का समाचार पाकर उन पुत्रों का हृदय दुःख संताप से भर गया। असहाय होने की भावना कि अब कोई नहीं रहा जिन पर निर्भर कर सकते हैं, अन्ततः उनकी चेतना को जगाया और उन्हें बोध हुआ कि कितना अमूल्य यह औषधि है। आखिरकार उन्होंने औषधि पी ली और विष के प्रभाव से मुक्त पूर्ण स्वस्थ हो गये। जैसे ही पिता ने सुना कि उसके सभी पुत्र स्वस्थ हो गये हैं, वह घर लौट आया, जिससे कि वे पिता को देख सकें।



## व्याख्या

पुत्रों के पिता, भैषज्यगुरु बुद्ध के प्रतीक है और पुत्रगण हम हैं तथा सभी जीवित प्राणियों के प्रतीक हैं। विषैली औषधि हमारी भ्रान्तियाँ हैं, अर्थात् लोभ, द्वेष एवं अज्ञानता रूपी तीन विष हैं और प्रभावशाली औषधि बुद्ध की धर्मदेशना या पुण्डरीक सूत्र की ओर इंगित करती है।

यद्यपि शाक्यमुनि, शाश्वत बुद्ध का नहीं तो उदय और नहीं ह्रास है, वे हमेशा हमारे सामने विद्यमान और निकट है, हम मनुष्य उनकी उपस्थिति से अवगत नहीं हैं, और इसके विपरीत, अपनी आँखों के सामने उत्पन्न होने वाली घटनाओं से जुड़े हुए हैं, हमारा मन उनसे अभिभूत और पीड़ित है।

बुद्ध की हमें देशना है कि सभी वस्तुओं की विद्यमानता अस्थायी है, जो कारण और कार्य सिद्धांत के अनुसार उत्पन्न होती हैं। जिन्होंने इस देशना को सुना और स्वीकार किया है, वे अपनी आसक्तियों से मुक्त हो जाते हैं और आध्यात्मिक शांति प्राप्त करते हैं।

हालाँकि, जो एक बार मुक्त हो गया, वह अंततः स्वार्थी हो सकता है और बुद्ध के धर्मोपदेश के विरुद्ध जा सकता है, वह बुद्ध से दूर हो जाता है जो उसका मार्गदर्शन करते हैं। चूँकि बुद्ध चिंतित थे कि ऐसा हो सकता है, उन्होंने इस दृष्टांत का उद्घोष किया।

बच्चों ने गलती से विषयुक्त औषधि पी ली और पीड़ित हो गये, जबकि पिता दूर प्रदेश में था। अपने पिता के घर लौट आने से सभी खुश हुए। इसका अर्थ है, जो लोग भ्रान्तियों से अभिभूत हैं, वे बुद्ध के बच्चे हैं और बुद्ध को देखकर प्रसन्न हैं।

सभी दुःखी लोगों को मुक्त करने के लिए, बुद्ध ने विभिन्न प्रकार के औषधीय जड़ी बूटियों को तैयार किया, उनका चूर्ण बनाया और मिलाकर प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति के अनुसार औषधि रूप में दिया, जो रंग, गंध स्वाद में परिपूर्ण और सेवन में आसान है। यह बुद्ध की उफनती करुणा को दर्शाता है, जिनकी कामना समस्त प्राणियों को दुःख से मुक्त कराना है।

जैसेकि बच्चों ने अपने पिता द्वारा दी गयी औषधि को तत्क्षण पी लिया, जो लोग बुद्ध की धर्मदेशना को स्वीकार करते हैं, वे शीघ्र मुक्त हो जाते हैं। हालाँकि, कुछ अन्य लोग धर्मदेशना को सुनना या स्वीकार करना पसंद नहीं करते हैं। ऐसा इसलिए है कि वे गंभीर रूप से भ्रमित हैं, उन्हें गलत विश्वास है कि उन्हें दी गयी औषधि सुस्वादु नहीं है और इसे पीना मुश्किल है। जो लोग केवल अपनी इंद्रियों की संतुष्टि के लिए जीते हैं, वे बुद्ध के शीलों के अभ्यास को अधिक समझते हैं और दूसरों के कल्याण के लिए बोधिसत्व मार्ग के अभ्यास को कष्टदायक मानते हैं।

बुद्ध अस्थायी रूप से लोगों की दृष्टि से ओझल हो गये। ऐतिहासिक रूप से इसका अर्थ है कि शाक्यमुनि ने मानव रूप में इस लोक में जन्म लिया और परिनिर्वाण में प्रवेश किया। शाक्य मुनि के परिनिर्वाण से जिन लोगों का हृदय शोक संताप में डूबा था और वे हतोत्साहित थे, उनमें अपने पैरों पर खड़े होने की आवश्यकता के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुयी। अपने मन में स्वस्थ और स्वतंत्र विश्वास स्थापित करना, धर्मदेशना की गवेषणा और अभ्यास करना, किसी और चीज से अधिक हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। बुद्ध नहीं रहे ताकि हम इसे महसूस कर सकें।

जब सभी बच्चों ने औषधि पी ली और वे पूरी तरह से स्वस्थ हो गए, पिता, जिसे बच्चों ने मृत समझ लिया था, घर आता है और एक बार फिर उनके सामने प्रकट होता है। इसका अर्थ है कि यदि हम बुद्ध की धर्मदेशना की सच्चाई से गवेषणा करते हैं और हृदय के अन्तर्तल से विश्वास करते हैं, तो बुद्ध स्वाभाविक रूप से हमारी आँखों के सामने प्रकट होंगे; दूसरे शब्दों में, हम बुद्ध की उपस्थिति से अवगत हो सकते हैं, जो हमेशा हमारे पास हैं।

Editorial Supervision by Chuo Academic Research Institute



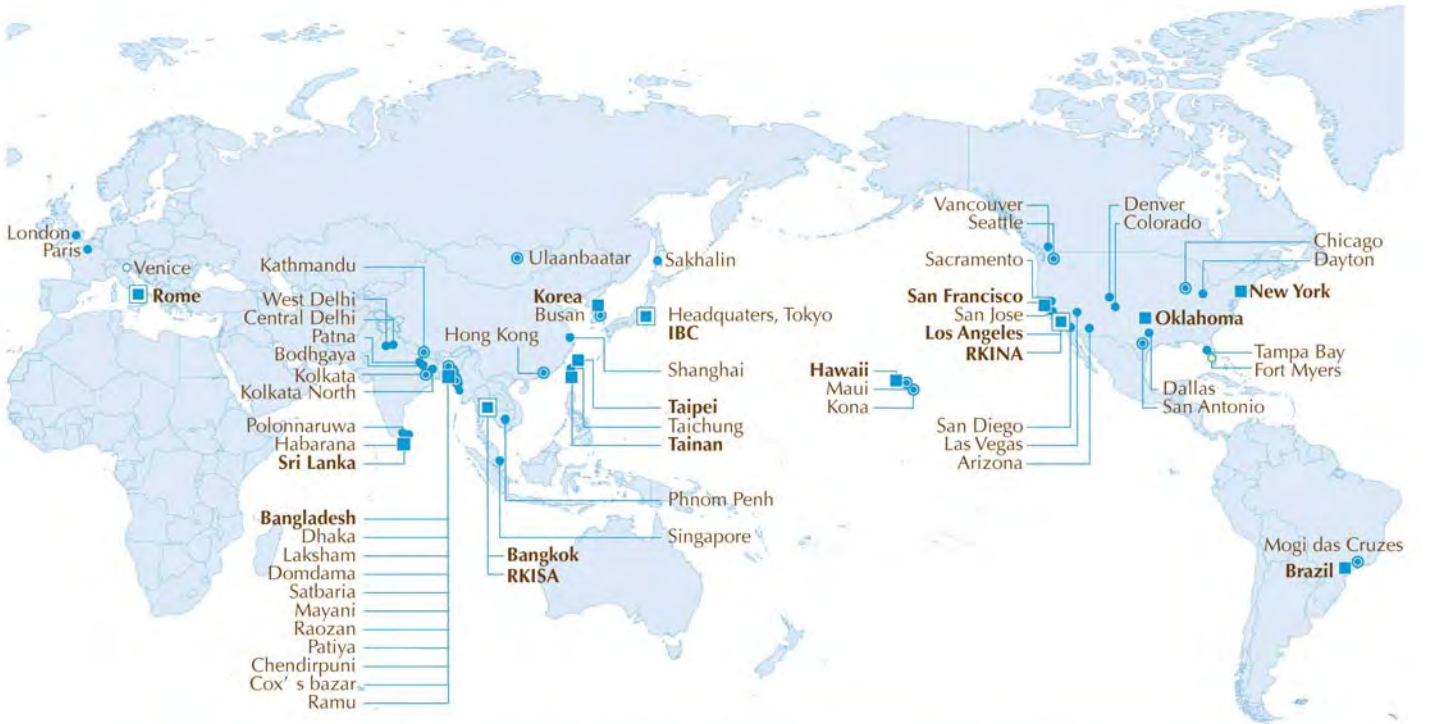


## संवेदनशील मन से विचार करना

29 अप्रैल को, टोक्यो में पुरुष ग्रुप के सदस्यों के पहल पर लंबी अवधि की सेवा के बाद जिन बिल्डिंगों को गिराने के लिए चिन्हित किया गया, उनके प्रति आभार प्रकट करने के लिए रिश्शो कोसेइ काइ के यूनिवर्सल गेट डे के अवसर पर फुमोन हॉल में सूत्र पाठ का आयोजन किया गया।

सूत्र पाठ के पूर्व, भाग लेनेवालो ने संस्थापक निवानो द्वारा धर्म वार्ता का विडियो देखा, जिसमें उन्होंने पुण्डरीक सूत्र के द्वितीय परिवर्त की "पाँच सौ भिक्षुओं के परिषद" से निकल जाने की घटना के परिप्रेक्ष्य में फुमोन हॉल के महत्व के बारे में समझाया था। संस्थापक निवानो ने कहा, उन्होंने पाँच हजार लोगों तक के स्थान पाने लायक इस विशाल हॉल को इसलिए निर्मित करवाया है कि पुण्डरीक सूत्र में वर्णित बुद्ध के धर्मोपदेश को सुनने से वंचित लोगों को गेट पूरी तरह खुला मिले। मैं संस्थापक की गहरी अनुकम्पा के संबन्ध में जानकर आश्चर्यचकित तथा प्रभावित हूँ, जिससे उन्हें फुमोन हॉल के निर्माण की प्रेरणा मिली।

इस माह के प्रेसिडेंट के संदेश से, मैंने "संवेदनशील मन से विचार करना" के महत्व को सीखा और संस्थापक का अनुकरण कर अपने शपथ का नवीनीकरण किया और एक व्यक्ति के रूप में उभरा हूँ जो दूसरों के बारे में पूरी तरह से और पूरे मन से सोचने में सक्षम हूँ।



**RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES**



We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus. Please send us your comments to the following e-mail address.  
E-mail: [living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp](mailto:living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp)

# Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

# 2018

## **Rissho Kosei-kai International**

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan  
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

## **Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)**

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A.  
Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437  
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

## **Branch under RKINA**

### **Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center**

28621 Pacific Highway South, Federal Way,  
WA 98003 U.S.A.  
Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261  
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com  
http://buddhistlearningcenter.org/

### **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio**

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.  
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA  
Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745  
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com  
http://www.rkina.org/sanantonio.html

### **Rissho Kosei-kai of Tampa Bay**

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.  
Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com  
http://www.buddhismtampabay.org/

### **Rissho Kosei-kai of Vancouver**

## **Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii**

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.  
Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633  
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

### **Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center**

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.  
Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

### **Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center**

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,  
HI 96740 U.S.A.  
Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

## **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles**

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.  
Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567  
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

### **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**

### **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**

### **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**

### **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**

### **Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

## **Rissho Kosei-kai of San Francisco**

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.  
Tel: 1-650-359-6951  
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

### **Rissho Kosei-kai of Sacramento**

### **Rissho Kosei-kai of San Jose**

## **Rissho Kosei-kai of New York**

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.  
Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499  
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

### **Rissho Kosei-kai of Chicago**

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.  
Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com  
http://home.earthlink.net/~rkchi/

### **Rissho Kosei-kai of Fort Myers**

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

## **Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma**

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.  
Tel & Fax: 1-405-943-5030  
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

### **Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver**

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.  
Tel: 1-303-446-0792

### **Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton**

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.  
http://www.rkina-dayton.com/

## **Rissho Kosei-kai do Brasil**

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,  
CEP 04116-060 Brasil  
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377  
Fax: 55-11-5549-4304  
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

### **Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes**

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,  
CEP 08730-000 Brasil  
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

## **Rissho Kosei-kai of Taipei**

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongjheng District,  
Taipei City 100 Taiwan  
Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433  
http://kosei-kai.blogspot.com/

## **Rissho Kosei-kai of Tainan**

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,  
Tainan City 701 Taiwan  
Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

## **Korean Rissho Kosei-kai**

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea  
Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696  
e-mail: krkk1125@hotmail.com

### **Korean Rissho Kosei-kai of Busan**

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea  
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

#### **Branches under the Headquarters**

##### **Rissho Kosei-kai of Hong Kong**

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,  
North Point, Hong Kong, Republic of China

##### **Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar**

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,  
Ulaanbaatar 15160, Mongolia  
*Tel:* 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

##### **Rissho Kosei-kai of Sakhalin**

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk  
693005, Russian Federation  
*Tel & Fax:* 7-4242-77-05-14

##### **Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia  
*Tel & Fax :* 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

##### **Rissho Kosei-kai of the UK**

##### **Rissho Kosei-kai of Venezia**

##### **Rissho Kosei-kai of Paris**

#### **International Buddhist Congregation (IBC)**

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan  
*Tel:* 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224  
*e-mail:* ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibe-rk.org/>

#### **Rissho Kosei-kai of South Asia Division**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang  
Bangkok 10310, Thailand  
*Tel:* 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218

#### **Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang  
Bangkok 10310, Thailand  
*Tel:* 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218  
*e-mail:* thairissho@csloxinfo.com

#### **Branches under the South Asia Division**

##### **Rissho Kosei-kai of Central Delhi**

224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,  
110060, India

##### **Rissho Kosei-kai of West Delhi**

66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka, New Delhi 110075, India

##### **Rissho Kosei-kai of Kolkata**

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

##### **Rissho Kosei-kai of Kolkata North**

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,  
West Bengal, India

##### **Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center**

Ambedkar Nagar, West Police Line Road  
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

##### **Rissho Kosei-kai of Kathmandu**

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,  
Kathmandu, Nepal

##### **Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,  
Phnom Penh, Cambodia

##### **Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center**

##### **Rissho Kosei-kai of Singapore**

#### **Thai Rissho Friendship Foundation**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang  
Bangkok 10310, Thailand  
*Tel:* 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

#### **Rissho Kosei-kai of Bangladesh**

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh  
*Tel & Fax:* 880-31-626575

##### **Rissho Kosei-kai of Dhaka**

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,  
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh  
*Tel:* 880-2-8413855

##### **Rissho Kosei-kai of Mayani**

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,  
District: Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Patiya**

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Domdama**

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar**

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Satbaria**

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Laksham**

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,  
Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Raozan**

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Chendirpuni**

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

##### **Rissho Kosei-kai of Ramu**

#### **Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka**

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka  
*Tel:* 94-11-2982406 *Fax:* 94-11-2982405

##### **Rissho Kosei-kai of Habarana**

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

##### **Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**

#### **Other Groups**

##### **Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**